सकारात्मक स्पंदन पुष्टि – वैष्णव

Vibrant Pushti

" जय श्री कृष्ण "

" कीर्तन "

पुष्टिमार्ग में श्री प्रभु को अपने आपको जुडने का एक अनोखा स्पर्श क्रिया है 🙏

सेवा में यह कीर्तन की प्रणालीका कहीं काल सें रीति निधि में सम्मलित की है 🙏

जिज्ञासा प्रश्न है 🙏

कीर्तन क्या है? और यह क्यूँ सेवा रीति निधि में सम्मलित है?

शीत काल - उष्ण काल - वर्षा काल अर्थात काल काल के आधारित यह कीर्तन प्रणालीका सास्वत की है? क्यूँ?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
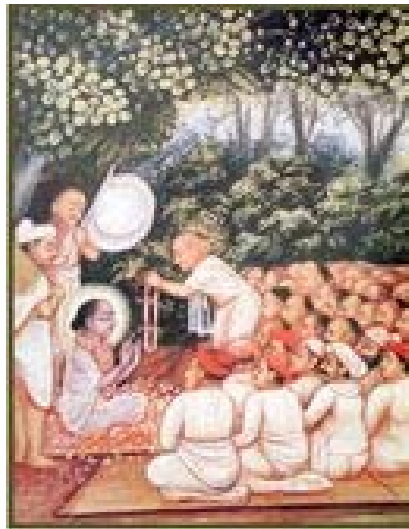
हे कल्याणरायजी!

हे गोवर्धननाथजी!

तेरे द्वार खडा दर्शन दिजोजी

तेरे मार्ग सीधा नमन स्वीकारोजी

मंगल दर्शन प्रेमास्पद कीर्तन

मंगल आरत निहारु मुखविंद

धन्य धन्य पाऊं दंडवत प्रणामु

तेरी पुष्टि झांकी हृदय बिराजु

तेरे द्वार खडा दर्शन दिजोजी

निश दिन तोरे मार्ग सिधाऊँ

डग भरत परिक्रमा ध्याऊं

जन जन जय श्री कृष्ण गाऊँ

कण कण पुष्टि प्रसाद पाऊं

तेरे द्वार खडा दर्शन दिजोजी🌷🙏

कल्याणराय प्यारे की जय

पुष्टि परिवार न्यारे की जय

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जिसका मन राधा मय

जिसका तन राधा मय

जिसका जीवन राधा मय

जिसका मनन राधा मय

जिसका नैन राधा मय

जिसका कदम राधा मय

जिसकी सांस क्रिया राधा मय

जिसकी धडकन राधा मय

जिसका मिलन राधा मय

जिसका विरह राधा मय

जिसका दामन राधा मय

जिसका अन्न राधा मय

जिसका जल राधा मय

जिसका स्वर राधा मय

जिसकी नजर राधा मय

जिसकी जरा राधा मय

जिसका गमन राधा मय

जिसका भजन राधा मय

जिसका नमन राधा मय

जिसका चिंतन राधा मय

जिसका शरण राधा मय

जिसका वरण राधा मय

जिसका करण राधा मय

वह " रा " नहीं पुकार सकते

वह " रा " नही कह सकते

वह " रा " नही पढ सकते

वह " रा " नही लिख सकते

वह " रा " नही सुन सकते

सदा समाधि - समाधि - समाधि 🌷🙏🌷

आनंद की समाधि

परमानंद की समाधि

सर्वानंद की समाधि

अखंडानंद की समाधि

मधुरानंद की समाधि

आत्मानंद की समाधि

केवल श्री कृष्ण है 🌷🙏🌷

केवल श्री शुकदेवजी है 🌷🙏🌷

केवल श्री गोपियाँ है 🌷🙏🌷

केवल श्री व्रज निकुंज है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सत्य "

सत् + अ्य

सत् - जो केवल सत अर्थात जो सर्वोत्तम - सच्चिदानंद हो

सत् - जो केवल विशुद्ध विश्वास और पवित्र आनंद हो

सत् - जो केवल सैद्धांतिक - संस्कारिक - सिद्ध हो

अ्य - अयन करना - संवरना - सिंचना - संस्कार - संस्कृति स्वीकार करना - अपनाना और स्व शिक्षित करके जीवन सर्वोत्तम करना।

अ्य - अपना मन, अपना तन, अपना चक्षुओं, अपना व्यवहार, अपना जीवन को केवल सत्य से ही योग्य करना।

सत्य - न तर्क, न अपेक्षा, न असुरक्षित, न अज्ञान, न असैद्धांतिक, न असाध्य, न अप्रमाणित, न अवैध, न तृष्टित हो, न द्विअर्थी, न निम्न हो।

सत्य - सदा सरल, सदा सर्वोच्च, सदा वास्तविक, सदा निखालस, सदा सत्वगुणी, सदा सलामत, सदा प्रेममय, सदा अखंड, सदा अतूल्य, सदा मधुर, सदा आनंदित हो

कठिन है - पर स्वीकारना ही है

इसलिए तो हम मनुष्य है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बूंद

है मुस्कुराती बौछार

एक सांस

है धडकती चिनगारी

एक गूंज

है स्पंदन झंकार

एक स्पर्श

है मिलन दिलदार

एक अक्षर

है प्रियतम प्यार

एक याद

है विरह फरियाद

एक ख्याल

है जुडने उमंग

एक रंग

है अंग रंग

एक संग

है जीवन संगम

एक गीत

है जीवन संगीत

एक रुप

है परम स्वरुप

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
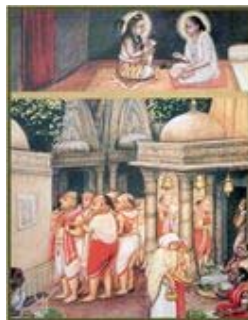
सुनी नैन की नजर

काजल से भर दिया नाम तेरा

कोरे मन की डगर

ख्याल से कदम साथ थामा तेरा

उडते तन का आँचल

चुनर से बांधा जीवन संसार तेरा

अपूर्ते भाल की मांग

सिंदूर से भर दिया प्यार नाम तेरा

सदा निभाना प्यार की राह

हाथ थामना कष्ट की आह

कान्हा तेरी धारा

प्रेम सागर पाये सारा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गंगा की एक बूंद मुक्ति प्रदानती है

यमुना की एक बूंद भक्ति प्रदानती है

सरस्वती की एक बूंद संस्कृति प्रदानती है

नर्मदा की एक बूंद तपश्चर्या प्रदानती है

गोदावरी की एक बूंद गौधूली प्रदानती है

कृष्णा की एक बूंद निकुंज प्रदानती है

सर्यू की एक बूंद साक्षर प्रदानती है

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

अमृत - धर्मामृत - चरणामृत - प्रेमामृत

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
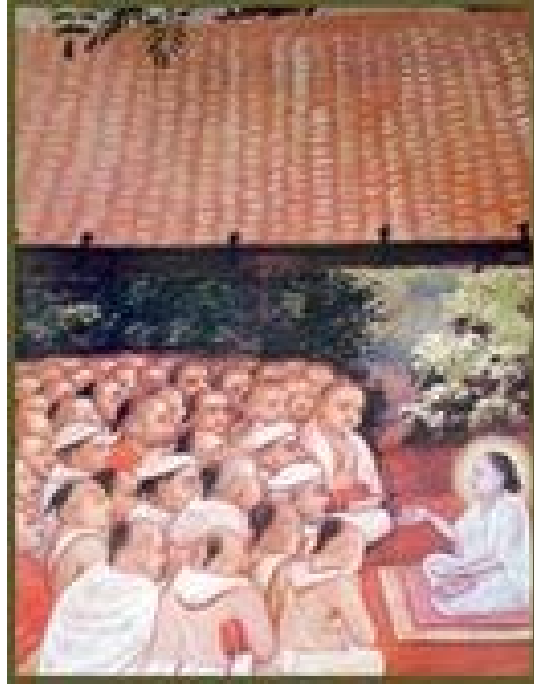
" चोर का जन्म जेल में "

" चोर का जन्म अंधेरी रात में "

" चोर का जन्म घनघोर घटा में "

जगत का कितना सर्वोत्तम परम पुरुषोत्तम

आधी रातको जेलमें जन्म धरे

काली रातमें जन्म धरे

घुमड घुमड घनघोर घटा से काली डिबांग रात में जन्म धरे

हाँ! हाँ! सच तो यही है सांसारिक समझ से की चोर तो रात को ही आता है

पर

यह कैसा चोर!

जिसने सारे जगत का दिल चोरा

जिसने सारे संसार को अपनी लीलाओं से चोर लिया

जो सदा हर एक के दिलमें बसा - कितना अनोखा चोर

जो चोर सोना दे

जो चोर पैसा दे

जो चोर माल मिलकत दे

जो चोर धनवान करे

जो चोर अपने आपको लुटाये

चोर से हर कोई गभराये

यह चोर से हर कोई सलामत रहे

चोर हर कोई को लुटे

यह चोर सबको स्वको लुटाये

चोर हर कोई को रंजाडे

यह चोर हर कोई को सहारा दे

चोर रात को ही चोरी छूपी चोरी करे

यह चोर दिनमें ही सबके सामने चोरी करे

चोर चोरी से हर कोई डरे

यह चोर चोरी से हर कोई हरखाये

खुदका रंग श्याम घनघोर घटा से श्याम

नजर नजर न आये अनेक तेजो से श्याम

सफेद माखन से नजर आये

आत्म प्रकाश से नजर आये

प्रेम विरह ज्योति से नजर आये

ऐसो मेरो घनश्याम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
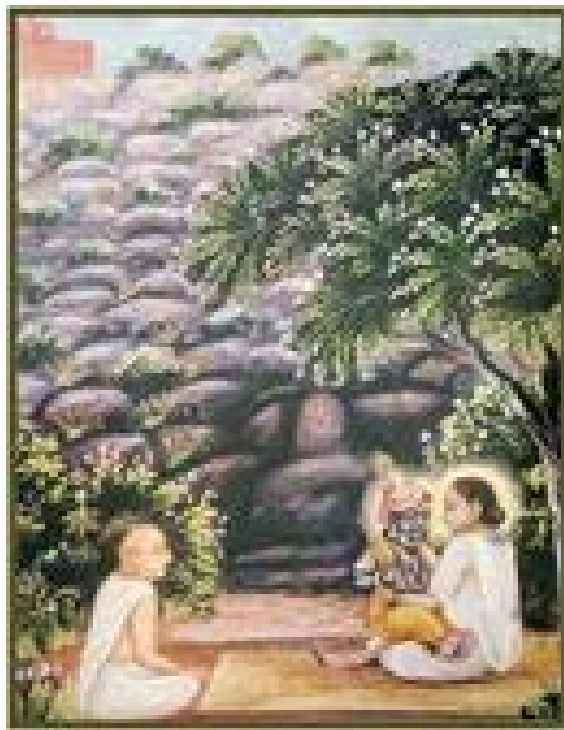
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

संसार के रंग

जीवन के अंतरंग

जो नजर से भी मिलाये

जो मन से भी मनवाये

यहां ही मिटाना है

मिटते मिटते ही

सब बिखरना है

बिखरते बिखरते ही

सब लुटाना है

है आखरी पडाव!

सब तेरा सिर्फ तेरा

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
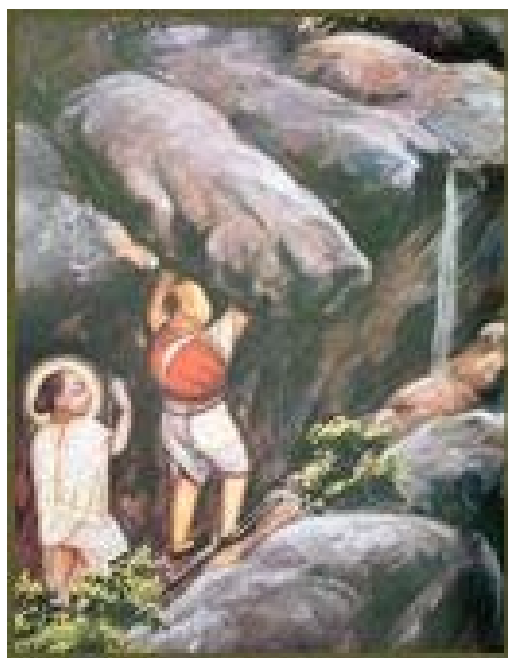
आपका नाम क्या है?

आप कहां रहते हो?

आपकी जन्म भूमि कौनसी?

आपकी कर्म भूमि कौनसी?

आप कौन कौन के साथ जुडे हो?

आप कौन कौन के साथ बंधे हो?

आपका जीवन कैसा?

आप अपने आपको क्या समझते हो?

आप क्या क्या कर रहे हो?

आप क्या क्या करवाने चाहते हो?

आपमें बार बार परिवर्तन क्यूँ है?

हर प्रश्न का उत्तर से इतना अवश्य पता चलता है की यह ब्रह्मांड में हर कोई ऐसे ही जन्म जीवन से है और अपने आपको कुछ न कुछ कक्षित करते रहते है।

यही योग्यता और कक्षता में घुमते घुमते जो कुछ हम पाते है वह पाते पाते हम आखरी पडाव पर पहूंचते है - यह आखरी पडाव क्या?

यह आखरी पडाव वहां जहां हम शुद्धाद्वैत हो 🌷🙏🌷

हम कितने भाग्यशाली है की हम अनेकों विशुद्ध, पवित्र, निरपेक्ष, शांत और अलौकिक आत्माओं से एकात्म होते होते परमकक्षा पर आनंदमय, आनंददायक, आनंद उपासक, आनंद सहायक, आनंद विधायक, आनंद साधक, आनंद उर्जित, आनंद द्रवित, आनंद रुप, आनंद स्वरुप होते है। 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

शाम निहाली श्याम हो गई

काजल घोला श्याम हो गई

झुल्फें संवारी श्याम हो गई

आँचल औढाई श्याम हो गई

हे श्याम! तु कैसा मन बसया

जो ध्याऊँ श्याम श्याम पाऊं

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

समय कितना अर्थ अभूत है

मन कितना अर्थ विभूत है

जीवन कितना अर्थ आहूत है

तन कितना अर्थ भभूत है

धर्म कितना अर्थ सबूत है

आत्म कितना अर्थ अमृत है

संस्कार कितना अर्थ निर्गत है

संस्कृति कितना अर्थ जगत है

साक्षर कितना अर्थ प्रमाणित है

सच! हम कब और कैसे सत्य पायेंगे?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे प्रभु!

हे हिंदु संस्कृति!

हे हिंदु भूमि!

हे हिंदु संस्कार!

हे हिंदु धर्म!

हे हिंदु जन्म!

हे हिंदु जीवन!

हे हिंदु मृत्यु!

हे हिंदु मोक्ष!

हे हिंदु मुक्ति!

हे हिंदु भक्ति!

हे हिंदु प्रेम!

हे हिंदु प्रेमास्पद!

हे हिंदु परमेश्वर!

हे हिंदु परब्रह्म!

आपके चरण कमल में कोटि कोटि नमन 🙏

आपके शरण पटल में कोटि कोटि वंदन🙏

भिन्न भिन्न में अभिन्नता

रंग बेरंग में एकरंग

क्रिया कर्म में एककर्म

प्रार्थना दुआ में एककिरण

वर्ण वर्ण में प्रेमवर्ण

गूंज गूंज में एकनारा

गर्व गर्व में एकगर्व

हमसे ही न्यारा हिन्दुस्थान

यही मान यही सन्मान

जयहिंद जयहिंद

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

राधा राधा राधा राधा

धारा धारा धारा धारा

राधे राधे राधे राधे

धेरा धेरा धेरा धेरा

राधा राधा राधा राधा

आधा आधा आधा आधा

सुधा सुधा सुधा सुधा

साधा साधा साधा साधा

राधा राधा राधा राधा

लाधा लाधा लाधा लाधा

बाधा बाधा बाधा बाधा

क्षुधा क्षुधा क्षुधा क्षुधा

राधा राधा राधा राधा

श्री राधा राधा राधा राधा

श्री राधा राधा राधा राधा

श्री राधा राधा राधा राधा

श्री राधा राधा राधा राधा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राधा " 🌷🌷🌷

नशा चेहरे से - नहीं नहीं

नशा पैसे से - नहीं नहीं

नशा दौलत से - नहीं नहीं

नशा रुप से - नहीं नहीं

नशा अंगडाई से - नहीं नहीं

नशा तो इश्क से है

इश्क किया वह नशे में डूब गया

इश्क किया वह नशे में खो गया

इश्क का नशा इतना मधुर

जिसने नजर से पिया वह नैनों में डूब गया

जिसने अधरों से पिया वह दिल में बस गया

जिसने ख्यालों से पिया वह रंग में रंग गया

जिसने यादों से पिया वह विरह में जल गया

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जिसको मिले जिसको पूछे
एक ही उत्तर - अच्छा हूं - सुखी हूं 🙏
जहां जहां एकाग्रता से निहालु
एक एक दु:खी एक एक प्यासे 🙏
मैं अकेला - मन से सोचें
मैं तरसा मै ही लालसा मैं ही भूखा 🙏
दूर दूर नजर नजर बिछाऊँ
धर्म क्या कर्म क्या वर्ण क्या? 🙏
मैं अटूला - आत्म से चिंतन
न मुझे मैं जानु - न मुझे कोई न जाने🙏
अपने रंग में अपने व्यंग में ऐसे रंगे
जो रंग रंग हर कोई बदले
कौन कौन स्व को पहचाने🙏
हर कोई कहे - मनुष्य जन्म सबसे निराला
कहीं जन्म जन्म से जन्मे
यही मौका स्व मनुष्य होना
आत्म आग लगाना 🙏
कौन सुने - कौन सुने
कान कान सब है बहरे
मैं अकेला मेरे तन मन धन जीवन जलाऊँ
धरम करम की ज्योत जलाऊँ
दूर दूर तक पुष्टि पूंज फैलाऊँ
जागो जागो हे जीवात्मा! 🙏
आत्मा से परमात्मा पाये
अज्ञान अंधेरा स्व आत्म प्रक्टाये🙏
मन मनुष्य में आनंद ज्योत प्रक्टाये 🙏
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितने अनोखे जीवन संस्कार हमारे

जो जन्म से सत्य समझे

कितनी अनोखी कौटुम्बिक धारा हमारी

जो जीवन जीते जीते आत्मा समझाये

कितने अनोखे बचपन के कदम हमारे

जो हर डग में निडर, शौर्य और निस्वार्थ रहना

कितनी अनोखी रीत भात हमारी

जो रीति से हम कला के न्यारे भात के दुलारे

कितने अनोखे समाज बंधारण हमारे

जो हर बंध में संस्कार मर्यादा

कितनी अनोखी विद्‌या शिक्षा हमारी

जो कदम कदम पर धर्म जागे

कितने अनोखे व्यायाम शिक्षा हमारे

जो खेल खेल से रहे योगी तंदुरुस्त

कितनी अनोखी संस्कृति हमारी

जो हर पहलु से परमात्मा जोडे

कितने अनोखे व्यवहार हमारे

जो प्रसंग प्रसंग हम निकटता बांधे

हे भारतीय! अनोखे अनोखी जीवनशैली

हर हर को नमन - हर हर को वंदन

हर हर को आशिष - हर हर को विश्वास

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" निर्जला एकादशी "
शास्त्र ने कहा - भीम एकादशी
शास्त्र ने कहा - कृष्ण एकादशी
वैज्ञानिक और ऋषिमुनियों की विलक्षणता के साथ साथ मनुष्य जीवन की परंपरा को भी सुसंगत और सुज्ञान को पहचानते और अपनाते हम निर्णय करे तो श्रेष्ठ और उत्तम है 🙏
भीम का जल में रह कर निर्जल
कृष्ण का भक्त की पराकाष्ठा में निर्जल तपश्चर्या
भीम की घटना
कृष्ण की विशिष्टता
हमें क्या संस्कार शिक्षा प्रदान करती है
निर्जल रहना है
कौनसा जल?
संसार रुपी जल से निर्जल रहना है
अज्ञान रुपी जल से निर्जल रहना है
अंधकार रुपी जल से निर्जल रहना है
अहंकार रुपी जल से निर्जल रहना है
असत्य रुपी जल से निर्जल रहना है
अशुद्ध रुपी जल से निर्जल रहना है
अपवित्र रुपी जल से निर्जल रहना है
धैर्य से समझे - हमारे जीवन में कितने प्रकार के जल है
श्रम जल
प्रेम जल
अश्रु जल
विरह जल
चरण जल
अधर जल
संतुष्ट जल
औषध जल
मंद जल
स्मरण जल
तीव्र जल
अगन जल
सोम जल
आकाश जल

धरती जल
वनस्पति जल
फल जल
वीर्य जल
सूर जल
शीतल जल
चंद्र जल
वचन जल
अंतरंग जल
स्पंदन जल
श्रद्धा जल
सेवा जल
कृपा जल
भक्ति जल
तप जल
मधुर जल
रसों वै स: जल
दुष्ट जल
क्रोध जल
मल जल
मदिरा जल
रासायणिक जल
असुर जल
क्रूर जल
काम जल
राग जल
माया जल
यह सर्वे जल से हमें निर्जल होना है
यह निर्जलता केवल संज्ञान की परमोत्तम ढ्रड तपश्चर्या से ही अंकुरित होती है
इसलिए वैज्ञानिक - ऋषिमुनियों - अवतारों - संतों - भक्त चरित्रों - प्रेमीजनों सदा अपने आपको निर्जल रखते है 🙏
यही ही योग्यता है " निर्जला एकादशी "
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भक्त

अपनी ही धून में

अपने ही आप में

अपने ही ख्याल में

अपने ही रंग में

अपने ही भाव में

अपने ही स्वभाव में

अपने ही अंतरंग में

अपने ही राग में

अपने ही ज्ञान में

अपने ही सूर में

अपनी ही नजर में

अपने ही लय में

अपने ही पथ में

अपने ही संग में

अपने ही प्रेम में

डूबता - खूपता - एकाकार होता

महात्मा

विश्वात्मा

ब्रह्मात्मा

स्वराट आत्मा

अखंडात्मा

आनंदात्मा

परमात्मा हो जाता है

जैसे कान्हा 🌷और हम कान्हा के भक्त 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" निर्जला एकादशी "

कहीं मान्यता - कहीं वार्ताएं - कहीं लोक वायकाएं - कहीं विवेचन 🙏

मान्यता कब जागे या माने

अधूरी समझ, अधूरा ज्ञान, अधूरा चिंतन🙏

वार्ताएं कब बने

अपनी समझ, अपना अनुभव, अपनी अंधश्रद्धा, अपना विचारविमर्श

जिससे जो समझे और माने और स्वीकार कर अपनाये 🙏

लोकवायकाएं

जो कहानियां कहीं युगो से चलती ही आये

जो कभी कभी मानसिक स्वीकृति

कहीं विवेचनाएं

जो ज्ञान अज्ञान से उदभवते विचार, विवेचन, हम ही सही का अहंकार

मेरे परम श्रद्धेय मित्रों!

आजकल कोई भी जो कुछ करना चाहता है - तो सिद्धांत और सत्य आधारित 🙏

" निर्जला एकादशी "

एक व्रत है - तपस्या है - वैज्ञानिक सूत्र है

जो हमारे ऋषिमुनियों ने यह तिथि, यह समयरेखा और यह सूर्य परिभ्रमण आधारित है 🙏

यह व्रत करने से हम अति द्रढ मनोबल, अति उर्जावान और क्षमतिधर होते है - हम हमारी पवित्र धारणा के मूलत्व को यह व्रत करके अति मजबूत करते है 🙏

यह तपस्या अर्थात हम एकाग्र हो कर हमारे मन, तन और हर आंतरिक चक्रों को तीव्रता प्रदान करते है - हमारा शरीर में ७०% जल तत्व से बंधारणीय है - यह जल तत्व का अतिक्रमण रोकने के लिए यह तपस्या है - जो हमारे लिए औषधि रुप है 🙏

वैज्ञानिक सिद्धांत आधारित हम यह तिथि को जो सूर्य समय रेखा से हमारी रेखाएं जोडे तो हम अति उर्जावान होते ही है 🙏

आप सभी को यह व्रत की बधाई 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम - हमारी साथ

कितने जीते है - कितने है?

ओहह! बढता ही जाता है - बढता ही जाता है - कौन जीव - मानव जीव

और कटते कौन कौन जाते है?

ओहह! कटते ही जाते है - कटते ही जाते है - कौन? तो वनस्पति, नदियां, पर्वतें, धरती, सागर और जगत 🙏

हम शिक्षित हो कर सोच सकते है

हम समझते हो कर सोच सकते है

हम अनुभव हो कर सोच सकते है

हम वार्ताविमर्श कर सोच सकते है

हम अपने आपको समझ कर सोच सकते है

सच! हम जीव है - तो कौनसे जीव?

यह धर्म की बात नही

यह वादविवाद की बात नही

यह सामान्यता से जीने की बात नही

यह बस जीते रहते है - का ढंढेरा समझने की बात नही

हम जो जो भी है - उन्हें अवश्य सोचना ही है

क्यूंकि हममें से ही कोई बढाता है और कोई काटता है 🙏

मेरी विनंती है - हमें जागना है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे राम! मृत्यु 🙏

जाना है संसार सागर पार

जाना है जगत जंजाल पार

जाना है कोई उस पार

जन्म से बंधे संबंध

जीवन से बंधे संबंध

मृत्यु से न रहे संबंध

मृत्यु से हर छूटे संबंध

सच यह कैसे बंधन

सच यह कैसे जीवन

बंध बंध बंधे संबंध

जो पल मांहि छूटे संबंध

कहां कहां हम जाय

क्या क्या हम पाय

मुठ्ठी बंध आये हम

हाथ पसार जाये हम

क्या क्या ले जाये

क्या क्या छुड जाये

हाँ! यही सत्य यही रहस्य

हर हर जाने अंक अंक जाने

तो भी जीते जीते

हर किसीको लुटे

पिया मिलन को

जग जग जीये

पिया विरहन को

जग जग छोडे

है रीत मृत्यु!

हे जीव खेले खेल रीत

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मन - मेरा मन या बहोतो का मन

गंभीरता से सोचना है 🙏

गोपिओं ने उद्दवजी से कहा मेरा मन तो श्यामसुंदर ले गयो है

मैं अपने मन को किस तरह समझाऊं?

की वह तो गया है - जो वापस नही आयेगा

अपने मन को स्थिर करके उन्हें दूसरी ओर मोड दो

बस! आज समाज में यही ही हो रहा है

हम हमारा मन कहींओ से जोड कर रखा है - कहींओ ओर मोड के रखा है तो कैसे ले सही निर्णय, कैसे करे सत्य कर्म 🙏

हे मानव! भूल जूठी जग जंजाल

न उनका कुछ तेरा होने वाला है

न हमारा कुछ उनका होने वाला है

सब अपने अपने फल से

सब अपने अपने जीवन से

पता नहीं क्यूँ बखेड़ा करे अनेकों मन से

तेरा ही तुझसे है

तो करले धैर्य एक मन से

एक मन से तु तवंगर होगा

एक मन से तु चाहे पायेगा

एक मन से तु चाहे संवारेगा

एक मन से तु स्व जीयेगा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गोपाल गोविंद गोवर्धन

मुकुंद माधव मधुसुदन

हे गोपाल! तुमसे खेले माखन चुरैया

हे गोविंद! तुमसे बसे बंसी धूनैया

हे गोवर्धन! तुमसे छूएं गौधूली गौरैया

मुकुंद माधव मधुसुदन

हे मुकुंद! तुमसे मुखरे मन मन इंद

हे माधव! तुमसे मूंदे मध मध नैन

हे मधुसुदन! तुमसे बिखरे मधुर वेण

गोपाल गोविंद गोवर्धन

गोपाल गोविंद गोवर्धन

मुकुंद माधव मधुसुदन

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम कितने महान है 🙏

हम हमारे घर " श्री परब्रह्म " बिराजाये

हम हमारे अंतर " ब्रह्मसंबंध " कराये

हम हमारे कर्ण " ब्रह्मत्व दिक्षा मंत्र " सुनाये

हम हमारे तन मन " ब्रह्मत्व " जगाये

हम हमारे आत्म " परब्रह्म " जुडाये

हम हमारे आंगन " परब्रह्म " खेलाये

हम हमारे चौखट " परब्रह्म " बिठाये

हम हमारे हाथ " परब्रह्म " खिलाये

हम हमारे मन तरंग " परब्रह्म " शृंगारे

हम हमारे सिंहासन " परब्रह्म " संवारे

हम हमारे मधुर स्वर " परब्रह्म " नचाये

हम हमारे लाड भाव " परब्रह्म " लडाये

हम हमारे ज्ञान " परब्रह्म " सेवाये

सच! हम हमारे से ही हमारा " परब्रह्म " हमारे साथ - हमारे सामने - हमारे से पाये

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

अदभुत है यह लीला

अदभुत है यह दिक्षा

अदभुत है यह शिक्षा

अदभुत है यह प्रेमाक्षा

इतनी निराली हमारी प्रारंभिक सुबह

तो

कितनी अनोखी हमारी आखरी रात होगी

सदा आनंद - सदा सर्वानंद - सदा नित्यानंद

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हमारा जीवन बिना दोष - बिना कष्ट - बिना दु:ख

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मनुष्य जन्म जाना ऐसे
कदम कदम मन घुमयो देश अनेक
स्थल स्थल जाती अनेक अनेक
कहीं श्याम कहीं गैऊँ कहीं गौर रंग
उंच निच मध्यम से कहीं कही अंग
मन मन संस्कृति अनेक अनेक
मान्यता रीवाज अनेक अनेक
अन्न भिन्न क्रिया भिन्न जीना समझना भिन्न
शिक्षा भिन्न संस्कार भिन्न धर्म धरना भिन्न
कहीं इकट्ठे कहीं देश कहीं अपने अपने देश
हर कोई जिये अपने अपने वेश
हर कोई जिये अपने अपने द्वेष
कोई कुछ भाषा कोई कुछ दिशा
अर्थ अर्थ से शेष जल जल से पेश
कोई मन से रोगी कोई तन से रोगी
रोग रोग के भोगी रीति नियम के योगी
भिन्न भिन्न विचारों से मन बांधे
भिन्न भिन्न पद्धति से जीवन सांधे
अनुभव अनुभूति से सच कहूं
हर कोई जन्म जीवन दु:खी दु:खी
कोई भगवान कोई ज्ञानी न सुखी सुखी
टटोल टटोल भटक भटक पटक पटक
हर कोई अपना करें लटक लटक
कोई कहें माया कोई कहें मैं सवाया
कोई कहें पाया कोई कहें मैं घवाया
ऐसी निति ऐसी भित्ति न कोई भाया
एक एक जो ऐसा जीया
न कोई अपना न कोई साया न कोई राया
हाथ बांध कर आया था हाथ पसारे जाया
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा राधा राधा राधा

राधा राधा राधा राधा

श्री राधा श्री राधा श्री राधा श्री राधा

श्री राधा श्री राधा श्री राधा श्री राधा

हे राधा राधा राधा राधा

हे राधा राधा राधा राधा

प्रिये राधा राधा राधा राधा

प्रिये राधा राधा राधा राधा

राधे राधे राधे राधे

राधे राधे राधे राधे

श्री राधे राधे राधे राधे

श्री राधे राधे राधे राधे

हे राधे राधे राधे राधे

हे राधे राधे राधे राधे

प्रिये राधे राधे राधे राधे

प्रिये राधे राधे राधे राधे

रा - कुछ होता है नैन में

रा - कुछ होता है मन में

रा - कुछ होता है तन में

रा - कुछ होता है धन में

रा - कुछ होता है जीवन में

रा - कुछ होता है स्वप्न में

रा - कुछ होता है स्पंदन में

रा - कुछ होता है मगन में

रा - कुछ होता है भजन में

रा - कुछ होता है प्रेम में

धा - पूर्ण - संपूर्ण - परिपूर्ण

धा - तप - तपस्या - तपश्चर्या

धा - एक - एकांत - एकात्म

धा - पाया - स्वीकारा - अपनाया

धा - आत्मा - आत्मीय - परमात्मा

धा - प्रेम - प्रेमास्पद - प्रेमपद

राधा - राधा - राधा - राधा

" Vibrant Pushti "
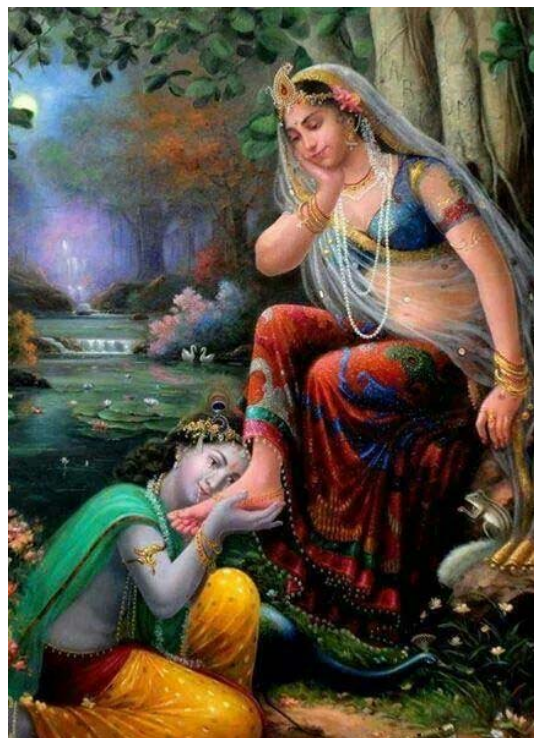
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बांकेबिहारी कुंजबिहारी राधाबिहारी

दासबिहारी व्रजबिहारी वृंदबिहारी

सखीबिहारी सखाबिहारी प्रेमबिहारी

मधुरबिहारी श्यामबिहारी मंजरीबिहारी

प्राणबिहारी आत्मबिहारी मनबिहारी

रंगबिहारी रजबिहारी रासबिहारी

नंदबिहारी यशोदाबिहारी भद्रबिहारी

ग्वालबिहारी गोपबिहारी रमाबिहारी

भावबिहारी रागबिहारी गीतबिहारी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

'सत्यव्रतं सत्यपरं त्रिसत्यं

सत्यस्य योनिं निहितग्त्श्च सत्ये।

सत्यस्य सत्यं ऋतसत्यनेत्रं

सत्यात्मकं त्वां शरणं प्रपन्ना:। '

अदभुत - अलौकिक और अनोखा श्लोक

यह श्लोक का अर्थ कौन कर सके?

श्रीवल्लभाचार्यजीने अपने चरित्र जीवनसे यह श्लोक का अर्थ और स्व को सार्थक किया है 🙏

श्रीवल्लभाचार्य के एक एक अक्षर - एक एक डग - एक एक कदम - एक एक स्वर - एक एक भाव - एक एक स्पंदन - एक एक द्रष्टि - एक एक उच्छवास - एक एक स्पर्श - एक एक स्मरण - एक एक क्रिया - एक एक विचार - एक एक समर्पण - एक एक रचना - एक एक समझ - एक एक सिद्धांत केवल पुष्टिमय था।🙏

अगर हम उन्हें अपना जन्म जीवन का आचार्य शरण स्वीकारते है तो हमें क्या होना है?

हमें क्या करना है?

सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य सत्य

सोचले 🙏 समझले 🙏 स्वीकारले 🙏

अपनाले 🙏 लुटाले 🙏 समर्पणले 🙏

यही ही शरणागति - चरणार्धि - परमार्थी

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आध्यात्म भारत

आधुनिक भारत

वैज्ञानिक भारत

ज्ञानी भारत

साथी भारत

श्रेष्ठ भारत

उत्तम भारत

महान भारत

वैविध्य भारत

अभिन्न भारत

शिक्षित भारत

निरपेक्ष भारत

विशेष भारत

वैश्विक भारत

विकसित भारत

स्वतंत्र भारत

रोजगार भारत

स्वस्थ भारत

सभ्य भारत

स्वच्छ भारत

समतल भारत

न्यायिक भारत

शांत भारत

औधोगिक भारत

सुंदर भारत

समवायिक भारत

शिस्त भारत

सहिष्णु भारत

सहयोगी भारत

स्वावलंबी भारत

धर्म निरपेक्ष भारत

आत्मनिर्भर भारत

जागृत भारत

निडर भारत

वीर भारत

मेरा भारत

यही ही तो हममें है

न किसीके होना है

न किसीमें आना है

न किसीका पाना है

न किसीका लेना है

न किसीके आड में रहना है

जीना है तो आन - बान और शान से

यही ही है हमसे हमारा भारत 👍IN

जयहिंद IN

भारतमाता की जय 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पंख होती तो उड आती रे

तुझे प्यार का रंग दिखलाती रे

यादों में खोई तडप तडप रही हूं

ख्यालों में डूबी अश्रु बरस बरस रही हूं

ख्वाबों में देखी हालत तेरे प्रेम की

मिलने का तो कोई ठिकाना नहीं था

रसिया ऑ जालिमा

तुझे प्यार का रंग दिखलाती रे
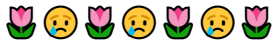
पंख होती तो उड आती रे

गोकुल में न पाया ढूंढा वृंदावन

मथुरा में न पाया ढूंढा द्वारिका

दूर दूर तक जगत में न पाया

कैसे मिलुं कहां मिले समझ नहीं था

रसिया ऑ जालिमा

तुझे प्यार का रंग दिखलाती रे

पंख होती तो उड आती रे

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरे ख्यालों शाम में आये

तेरा ख्वाब रात में आये

तेरी याद पल पल में आये

साथ हाथ से कहीं दूर जाये

न तुम तुम न हो

न मैं मैं न हूं

सुबह का एक सूरज हो

शाम का एक चंद्र हो

🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे कान्हा! कैसी हालत करदी है

बस तु तु और तु

चाहे नजर कहीं पहुंचे

श्याम श्याम श्याम श्याम

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारी संस्कृति कितनी आध्यात्मिक है - आत्मीय है

नैन से नर्मदा

मन से महानंदी

तन से ताप्ती

धन से धर्मि

कर्ण से कावेरी

जीवन से जमुना

गुन से गंगा

सत से सरस्वती

वन से वृंदा

ज्ञान से ज्ञानेश्वरी

विज्ञान से विश्वामित्री

दान से दामोदर

धान से धरती

मान से मान सरोवर

अन्न से अलकनंदा

हम कितने भाग्यशाली है की हम सदा यही से हमारा जन्म पावन करते है - पवित्र करते है - पुरुषोत्तम करते है - पुष्टि करते है 🙏

अलौकिक धरोहर - धात्री है जन्म जन्म योनि योनि की 🌷🙏🌷

हमारा सदा प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"धर्म धारत इति धर्मिष्ठ "
दर्शन करने से
भजन करने से
सेवा करने से
सत्संग करने से
पाठ करने से
मंत्र पढने से
परिक्रमा करने से
यात्रा करने से
क्या हम धर्मिष्ठ है?
या
धर्म के सिद्धांत अपनाने से
धर्म की शिस्त रखने से
धर्म का सन्मान रखने से
धर्म की आज्ञा रखने से
धर्म की रक्षा करने से
धर्म का आचरण करने से
धर्म की पवित्रता पाठवने से
धर्म का विश्वास प्रदान करने से
धर्म की सत्यता उत्थान करने से
धर्म का संस्थापन करने से
धर्म का पालन करने से
धर्म की सुसंगतता पाने से
धर्म को विद्यामान करने से
धर्म को अखंड करने से
धर्म की न्यायिकता स्वीकारने से
धर्म की नित्यता जगाने से
हम आडंबरी है - अहंकारी है
या धर्मिष्ठ है?
स्व निर्णय श्रेष्ठ प्रमाण 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सुख संपत्ति "
यह शब्दों - यह स्वरें कौन नही जानता?
हर कोई जानता है 🙏
क्यूंकि पल पल संकल्प पल पल कार्य
पल पल परिवर्तन पल पल विचार
कौन है ऐसा जो सुख संपत्ति लुटाये?
लुटाये वह - मूर्ख, नासमझ, अनपढ, पागल और बेवकूफ और आखिर में शायद ज्ञानी सन्यासी या भक्त 🙏
अर्थात
इससे यह समझ आ रहा है की हर कोई " सुख संपत्ति " शब्दों और स्वरों का अर्थ और मूल्य जानते है 🙏
हम जरा गौर से अपने आपके जीवन चरित्र को टटोले और साथ कहीं ज्ञानी या भक्त का चरित्र टटोले 🙏
हम अवश्य समझ पायेंगे सुखी कौन
हम अवश्य समझ पायेंगे संपत्तिवान कौन?
दौड दौड तो भी सुखी नहीं
भाग भाग किया तो भी संपत्ति नहीं
सुख का सही अर्थ संपत्तिवान, धनवान, नामवान, इजारदार, मालदार, पैसादार, रुपवान होता है तो कुबेर दु:खी था, इन्द्र दु:खी था, रावण दु:खी था 🙏
कोई भी एक चरित्र बताओं - जो सुखी है?
अरे! कोई तो ढूंढ निकालो - सुखी और संपत्तिवान को?
अगर आपको जो भी योग्य हो उनसे मिलो, जुडो - अगर वह तुम्हें अवश्य सुखी संपत्तिवान हो तो उन्हें प्रणाम करके कहें -
१. तुम मेरे गुरु हो 🙏
२. तुम मेरे मातापिता हो 🙏
३. तुम मेरे भाईबहन हो 🙏
४. तुम मेरी अर्धांगिनी हो 🙏
५. तुम मेरी प्रियतम हो 🙏
६. तुम मेरे मित्र हो 🙏
अगर, यह विषय निकले और अजीबोगरीब सैद्धांतिक बात से यह शब्दों का और स्वरों की बहस हो तो स्व चिंतन से खुद को टटोलना - जो तत्व निकलेगा
वह तुम्हारा सुख है - संपत्ति है
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी प्रीत में मैं क्या हुआ

जो तु चाहे वह मैं शृंगारा

जो तु चाहे वह मैं तन धरा

जो तु चाहे वह मैंने मन मनाया

जो तु चाहे वह मैंने धन लुटाया

जो तु चाहे वह क्षण क्षण घटा

जो तु चाहे वह तडप तडप बिताया

जो तु चाहे वह तरस तरस तरसाया

पर

न तुझसे बिछडा - न तुझसे रुठा

न तुझसे चुभाया - न तुझसे घवाया

रज रज तुझे पाया रंग रंग तुझे रंगाया

तेरी सूक्ष्म प्रण से प्राण, आत्मा दिल बसाया

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे राधा! तु ही मेरा प्रेम है

हे राधा! तु ही मेरी सांवरि है

हे राधा! तु ही मेरी प्रिया है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओहह! 🌷🙏🌷

कौन यह नही कहता

हर जीने वाला हर दूसरे जीने वाले को

जरा ध्यान दे - हर कोई ऐसा कहता है

स्वयं में सुधार लाने से ही संसार में सुधार आ सकता है 🌷🙏🌷

कथा सुने वक्ता कहे

विद्यालय में शिक्षक कहे

घर में मातापिता कहे

मंदिर में गुरु कहे

समाज में ज्ञानी कहे

दुनिया में स्नातक कहे

जगत में आचार्य कहे

संसार में गुरु कहे

जहा हो वहां कोई भी कहे

समझ नही आता है

हर कोई हर एक को क्यूँ कहते है?

इसकी समझ और अर्थ क्या?

तो हर कोई चलते बने और कहते है -

"स्वयं में सुधार लाने से ही संसार में सुधार आ सकता है 🌷🙏🌷

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीवन की हर क्षण सदा परिवर्तित है

यह परिवर्तन तत्वों का सिद्धांत है

हर कुछ परिवर्तित होता है

यह परिवर्तन का सिद्धांत को योग्य और श्रेष्ठ हम मनुष्य कर सकते है

यह वही मनुष्य कर सकता है

जो यथार्थ हो जो सार्थक हो

यह परिवर्तन केवल स्व उत्तमता के लिए ही निर्मित होता है जो हम उन्हें श्री प्रभु की कृपा या आशीर्वाद समझते है 🙏

यह सिद्धि मनुष्य को जो प्रदान होती है वह केवल योग्य धर्म और कर्म निर्मित होती है - न उसका दुरूपयोग और न व्यवसाय वांछित है. अगर ऐसा प्रमाणित है तो यह सिद्धि क्षीण और नष्ट हो जाती है

यह हर मनुष्य जानता है - समझता है

यह पाना अति आवश्यक. है

यह तो हमारे जन्म जीवन का योग्य पुरस्कार है

हमारा आनंददायक पुरुषार्थ है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
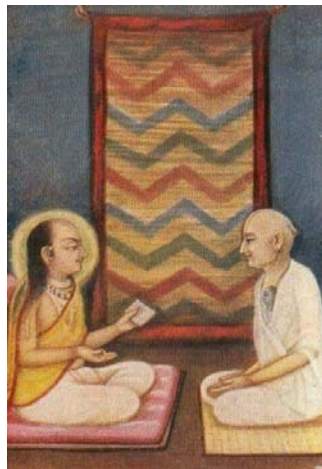
तुझे छुपाऊं यह नैन में

तुझे छुपाऊं यह मन में

तुझे छुपाऊं यह धडकन में

तुझे छुपाऊं यह दिल में

तुझे छुपाऊं यह आतम में

तुझे छुपाऊं यह प्रीत में

छुप छुप कर तेरा रंग हो जाऊंगा

रंग रंग से रंगीला हो जाऊंगा

ऐसा बिखरुँ ऐसा चुमु तुझे

मैं तेरा रंग हो जाऊं

मैं तेरा अंग हो जाउं

मैं तेरा संग हो जाऊं

मैं तेरा उमंग हो जाऊं

हे राधा! यही ही हमारी दीवानगी

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

है कुछ आनंद मेरा

है कुछ आनंद तेरा

मिलते मिलते होता सवेरा

आकाश भरे रंग अनोखे

धरती हरियाले लहरे लहरे

सूरज किरणें सुनहरे सुनहरे

है कुछ आनंद मेरा

है कुछ आनंद तेरा

पंखी गाये किलबिल किलबिल

झरना नाचे छमछम छमछम

दिन उगा संकल्प नये लिए

है कुछ आनंद मेरा

है कुछ आनंद तेरा

मेरा मन खिला शुकुन शुकुन

मेरा तन जागा सगुन सगुन

जीवन पाया मधुर मधुर

है कुछ आनंद मेरा

है कुछ आनंद तेरा

हे श्याम! तु प्रेमिला

हे कान्हा! तु रंगीला

हे गोपाल! तु निराला

हे गोविंद! तु रखवाला

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" गरीबी "

कौन नहीं वाकेफ यह शब्द से!

कौन नहीं छूत यह स्पर्श से!

कौन नहीं ज्ञानी यह ज्ञान से!

कौन नहीं स्वामी यह परिस्थिति से!

कौन नहीं जन्म यह जीवन से!

कौन नहीं संग यह मित्रता से!

कौन नहीं तवंगर यह पुरुषार्थ से!

कौन नहीं संघर्ष यह कक्षा से!

कौन नहीं सत्य यह माध्यम से!

सच! है ही ऐसी आबरू जो बूंद बूंद से सागर भई

जो अडग रहे धर्म सिद्धांत से

बूंद बूंद पी सागर संवारा

सच! है ही ऐसा काल जो घडी घडी से युग भया

जो अचल रहे सत्य आँचल से

घडी घडी मोड युग उभारा

प्रणाम 🙏 प्रणाम 🙏 प्रणाम 🙏 प्रणाम 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कजरारे काजल से नैन तेज किये

काला काला रंग घोलकर पलक अपलक किये

नैन नैनन से प्रियतम नजर धर दिये

ऐसा बसा प्यार उनका जो नैन खिल पडे

बसते बसते झुकी पलक प्रियतम ठहर गये

ठहर ठहर से यारें तस्वीर जागी

प्रिये के मुखारविंद के दर्शन हो गये

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे कान्हा! तेरी राधा तेरा जुहार करती है

" Vibrant Pushti "
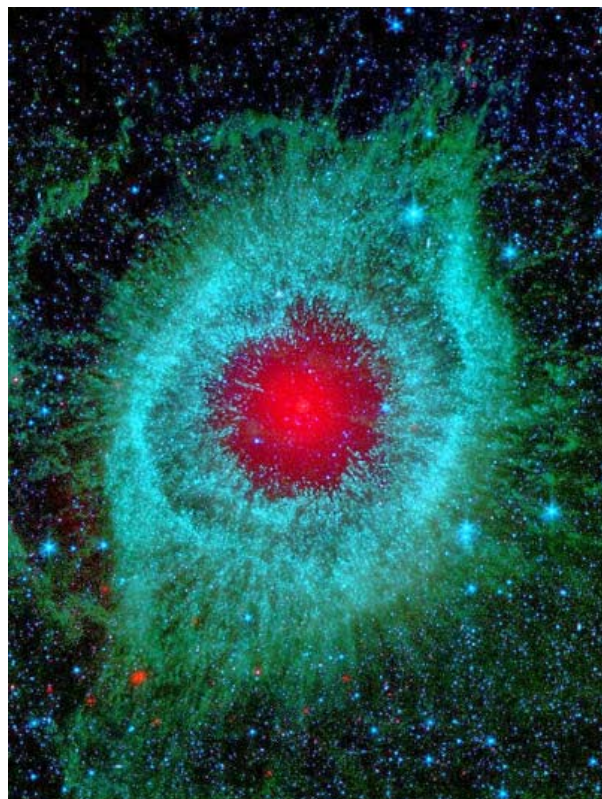
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी महोब्बत तेरी रुह

मुझे छुएं बार बार

मेरा ख्याल मेरी याद

तुझे पुकारे बार बार

मेरे स्वर से जागे तेरी महोब्बत

मेरे ख्याल से तु मन में समाये

यही स्पंदन यही चाह

मेरी महोब्बत तुझमें जगाये

मेरे रुह की यही ज्योत

तेरी रुह में मेरी महोब्बत प्रकटाये

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

हे राधा! तु मैं हूं मैं तु है

यही हमारे प्रेम की पराकाष्ठा

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरा नाम गौरी

तेरा नाम बहुरी

तेरा नाम छोरी

तेरा नाम प्यारी

तेरा नाम जोरी

तेरा नाम न्यारी

तेरा नाम पोरी

तेरा नाम दुलारी

तेरा नाम यारी

तेरा नाम बावरी

तेरा नाम फोरी

तेरा नाम म्हारी

मेरा दिल कहे तु है केवल सांवरि

है ना?

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे वल्लभ! आप डग डग चले

जगाई श्री सुबोध धारा

हे यमुना! आप डग डग चले

रचाई श्री गोपि लीला

हे गुंसाईजी! आप डग डग चले

सजाई श्री अंग सेवा

श्री हरिरायजी! आप डग डग चले

घडाई श्री पुष्टि मार्ग चारित्र्यता

श्री अष्टसखाजी!आप डग डग दौडे

गाई पुष्टि सिद्धांत माला

मेरे लिए इतना पुरुषार्थ

मुझे जगाने स्व शास्त्रार्थ

मुझे अपनाने स्व चारितार्थ

हे पुष्टि प्रभु श्री नाथजी!

हे पुष्टि प्रभु श्री गोवर्धननाथजी!

आपको रज रज शरणागत 🙏

आपको रग रग चरणागत 🙏

आपको सांस सांस दासगत 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दूर नगरी बडी दूर नगरी

कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी व्रज नगरी

जनम जनम तेरे शरण पाऊं

योनि योनि तेरी चरण पखारु

जब जब ऐसा तन मन धरु

नहीं तु आये करीब बडी दूर नगरी

दूर नगरी बडी दूर नगरी

कैसे आऊं मै कन्हाई तेरी गोकुल नगरी

सांस सांस तेरा स्मरण ध्याऊं

नजर नजर तेरा दर्शन चाहूं

जब जब ऐसा गुनगान गाऊं

नहीं तु रीझे यह गरीब बडी दूर नगरी

दूर नगरी बडी दूर नगरी

कैसे आऊं मैं कन्हाई तेरी डाकोर नगरी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम अपने आपमें जितने योग्य शिस्त, सिद्धांत और निखालस स्वीकार्य हम ते जायेंगे उतने ही हम सलामत, निर्मोही और पुण्यशाली होते जायेंगे 🙏

हम न किसीसे डर सकते है, हम हर समय और परिस्थितियों का सामना बिलकुल साधारणता से कर पायेंगे 🙏

निष्ठुर जगत के कोलाहल से दूर कहीं होंगे

अर्थात हम हमारे ही स्थान को इतना श्रेष्ठ बनाया होगा की न हम कोई भी बनावट में लिपट सकते है 🙏

हमारा धर्म की श्रेष्ठता यही है

हमारे धर्म की चेष्टा यही है

हमारे धर्म की विशिष्टता यही है

हर एक को योग्यता चाहिए ☑

हर एक को निखालसता चाहिए ☑

हर एक को शिस्त चाहिए ☑

हर एक को सलामती चाहिए ☑

हर एक को सैद्धांतिक चाहिए ☑

तो हर सुखी हर खुशी हर आनंदी

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

व्रज रंग की जय

व्रज संग की जय

व्रज उमंग की जय

व्रज तरंग की जय

व्रजराज की जय

व्रजसाज की जय

व्रज रास की जय

व्रज वास की जय

व्रज याद की जय

व्रज ख्याल की जय

व्रज यात्रा की जय

व्रज दर्शन की जय

व्रज ध्यान की जय

व्रज रज की जय

व्रज भज की जय

मुक्ति कहे गोपाल सों, मेरी मुक्ति बताएं।

व्रज रज उड मस्तक लगे, मुक्ति मुक्त हे जाए।।

हे व्रज रज!

सदा स्मरण - सदा नमन - सदा सृजन 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सर झुकाया तो मूरत हंस पडी

सर उठाया तो मूरत ठहर पडी

सर तिरछाया तो मूरत गूंज़ उठी

सर कटाया तो मूरत मैं हो उठी

सच! प्रेम की क्या प्रक्रिया है

सर से सर मिलाया स्व भगवान हो उठा

🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

राधा व्रज में

राधा बरसाना में

राधा रावलगांव में

राधा वृंदावन में

राधा निधिवन में

राधा निकुंज में

राधा गहरवन में

राधा हरिदास में

राधा प्रेमविरह में

राधा प्रेमपराकाष्टा में

राधा गोपि में

राधा गोप में

राधा गौधूली में

राधा बंसीनाद में

राधा पायल रुमझुम में

राधा प्रेमशरण में

राधा कृष्णहृदय में

राधा प्रेमानंद में

राधा आत्मानंद में

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

माँ - जो सदा समर्पण 🙏

पिता - जो सदा शिस्तबद्ध नियमन 🙏

भाई - जो सदा राम लक्षणा 🙏

छोटा भाई - जो सदा भरत सेवक 🙏

बहन - जो सदा यमुना रक्षक 🙏

पुत्र - जो सदा कर्ण दाता 🙏

पुत्री - जो सदा विधाता 🙏

पत्नी - जो सदा परिचारिका 🙏

पौत्री - जो सदा गंगा मुक्ति 🙏

पौत्र - जो सदा हनुमान चाकर🙏

चाकर का अर्थ है - जो भी उससे अपनी चाह से करवाये

चाह - सही चाह उनमें ही जागृत होती है जो मर्यादा पुरुषोत्तम हो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अति गंभीरता से सोचिए 🙏

हमारा घर मंदिर

हमारी गृह सेवा मंदिर

हमारी शिक्षा मंदिर

हमारा संस्कार मंदिर

हमारा धर्म मंदिर

हमारा कर्म मंदिर

हमारा विचार मंदिर

हमारा कार्य मंदिर

हमारा साथ साथ मंदिर

हमारा मातापिता मंदिर

हमारे भाईबहन मंदिर

हमें भाई भाई मंदिर

हमारे पुत्रपुत्री मंदिर

हमारा कुटुंब मंदिर

हमारा संबंधी मंदिर

हमारे सगासबंधी मंदिर

हमारे स्नेही मंदिर

हमारा समाज मंदिर

हमारा जीवन मंदिर

हमारा व्यापार मंदिर

हमारा संकल्प मंदिर

हमारा अनुष्ठान मंदिर

हमारे मनोरथ मंदिर

हमारी सेवा मंदिर

हमारा विश्वास मंदिर

हमारी संस्था मंदिर

हमारी अर्थोपार्जन मंदिर

हमारी व्यवस्था मंदिर

हमारे व्यवहार मंदिर

हमारे व्यवसाय मंदिर

अर्थात

हमारा हर हर मंदिर

गंभीरता से सोचना यह मंदिर मंदिर करके हमने उसे धंधा बना दिया है - गंदा बना दिया है - हमने हमारा जीवन बरबाद कर दिया है

बस कैसे भी पैसा - बस कैसे भी आडंबर

बस कैसे भी कहना पर सत्य नही समझना

क्या हमारे पूर्वजों ने धंधा बनाया - गंदा बनाया तो हमारा कर्तव्य है उनमें सुधार लाना 🙏

हम भी वैसे तो हमारे जीवन कैसे? 🙏

जागो जागो जागो

मान्यता और अंधश्रद्धा के अंधकार और अज्ञान को मिटाओ 🌷🙏🌷

क्या हम ऐसे ही रहेंगे?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मार्ग मार्ग की मंझिल नोखि

पुष्टिमार्ग की मंझिल अनोखी

श्री वल्लभ पुकारे हमें दमला कह कर

मार्ग प्रक्ट किया तुझे वैष्णव कह कर

मंत्र श्री कृष्ण: शरणं मम सुना कर

पुष्टि संबंध करवाया श्रीनाथ शरण कर

न मोक्ष मिलाया न मुक्ति दिलाई

पवाई अष्टसखा अनन्य भाव से

कृपा कृपा श्री वल्लभ कृपा कृपा

वचन निभाऊं वर्तन जगाऊं

पुष्टिमार्ग के सिद्धांत पसारु

हे मेरे पुरुषोतम वल्लभ!

हे मेरे आचार्य वल्लभ!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथद्वारा

बाबा! ओ बाबा! आप ऐसे क्यूं बैठे हो?

क्या थक गये हो? या कुछ होता है?

बाबा ने मूंदती नजर से आंखें खोली तो एक नन्हा सा - छोटा सा बालक उनके कंधों को हिलाकर पूछ रहा था।

बाबा! मौन और सोचने लगा नाथद्वारा में मुझे बाबा बाबा कहने वाला कौन?

बालक ने वापस पुचकारा - बाबा! बाबा! उठो, आप इतनी भीड में यहां कैसे आ गये? आप ऐसे रास्ते में बैठ गये हो - अभी तो बहोत चलना है।

बाबा ने फिर आंखें खोली और उनकी ओर देखते देखते कहा - बेटा! मुझे क्या मालूम था की नाथद्वारा हवेली में दर्शन की ऐसी कठोर व्यवस्था की है।

बालक बोला - बाबा! अभी तो दो दरवाजे खोलने है और आगे पिछे भीड ही भीड है आप गीर जाओगे! यहां बैठने से अच्छा है मैं आपको एक ऐसा सुलझा हुआ रास्ता बता दू।

बाबा बोले बेटा! यह ऐसी व्यवस्था क्यूं है? क्या श्री प्रभु यह व्यवस्थापकों को कोई संकेत या मार्गदर्शन नहीं कर सकते है? कितने लोग हैरान है और होते है? हम बडे उम्र वालें - तन के रोगी - मन से थके, कैसे यह चक्रव्यूह से दर्शन तक पहुंचे?

बाबा! यह सब बातें छोडो - मैं आपको रास्ता बताउं ऐसे चले तो अवश्य आपका हल निकले जायेगा।

अरे बेटा! तुम केवल मेरा हल करने आया है! ओहह! अदभुत🙏 एक बात पूछे?

हाँ! बाबा पूछो - गंभीरता से बालकने कहा

बेटा! मेरा अकेला हल करना और बाकी औरों के लिए कौन करेगा? तुम अनायास मेरे पास आ गये हो - बाकी अनेकों के पास कौन जायेगा? उनका हाल और ऐसी दुर्गम व्यवस्था का हल कौन करेगा?

नन्हा सा बालक सहमा गया - दूर दूर तक देखा तो - ओहह! बाबा के जैसे तो कितने लोग है, बाबा सही कह रहे है। सोचने लगा सच! गजब का चक्रव्यूह है - कोईके चहरे पर उदासीनता है - कोईके मुख पर ग्लानी है - हैरानी है - असामर्थत्यता है। साथ साथ मनमें ऐसे अज्ञात वचनों - दर्शन करना हो तो परिश्रम और तपस्या करनी पडती है - ऐसे थोडे दर्शन होंगे?

बालक गंभीर उपाय सोचने पर मजबूर हो गया और सोचने लगा - कैसा मेरा प्रथम प्राकट्य! जो मैंने श्री वल्लभ को कहा - मेरे लिए मंदिर बनवाओ - मुझे अनेक जीवों के लिए यह स्वरुप में रहना है। और आज यही जो भी कुल है वह मुझे और मेरे भगवदीय जीवों को हैरान करता है? मेरी आड से स्व को श्रेष्ठ ज्ञानी और समाज सेवक प्राधान्य भोगता है? मेरा प्राकट्य उद्देश्य को मिटाकर अपना साम्राज्य बिछा दिया! ओहह! मजबूर मजबूर! 🙏

Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नाथद्वारा
बालक सोचते सोचते उन्होंने एक ऐसी लीला जगाई की नाथद्वारा स्थली के रहते नाथद्धारा वासी अपने घर घर से अपने हाथ से पके हुए सामग्री को लेकर हवेली चोक में इकठ्ठे होने लगे और जो दर्शनार्थी को जल आहार की जरूरत पडे तो उनकी सेवा कर सके 🙏
हर दर्शनार्थी अति आनंद और श्री श्रीनाथजी की अनुकंपा और कृपा पर साक्षात्कार की अनुभूति करने लगे। हर कोई एक अखंड तप से अपने आपको धन्य समझने लगे 🙏
एक नगरवासी ने सूचन किया - आज हम सब इकठ्ठे हो कर, जो अभी के व्यवस्थापक है उनसे मिलकर कोई अदभुत व्यवस्था का आयोजन करें। हर कोई उमड पडा और सीधा पहुंचे व्यवस्थापक समिति में - समिति भी इतनी आनंदित हो गई - ग्रामजनों का इतना साथ 🙏
तुरंत ही योग्य निर्णय लेना था -
हर यात्रालु के लिए सरलता से श्री प्रभु दर्शन 🙏
न कोई रुकावट - न कोई आड वाड सीधा दर्शन द्वार 🙏
उम्र कक्षित मार्ग बनाये - हर मार्ग पर कोमल चादर - महक महक भरे सुंदर इत्र छंटकाव 🙏
बडे उम्र के लिए अलायदा मार्ग - जो नजदीकी से दर्शन पाये 🙏
अपंग - दिव्यांग - अलायदा मार्ग - व्हीलचेयर से सीधा दर्शन 🙏
अगियारस या पूनम तिथि - भीड जब जब अधिक उमटे - प्रारंभ से ही चौडा और सीधा मार्ग जो यात्री जल्द पहुंचे - जल्द बाहर पाये 🙏
बाहर निकलने का बडा मार्ग बडा दरवाजा जो सीधा पहुंचे अपना सामान 🙏
चौराहे पर सामान व्यवस्था, व्हीलचेयर व्यवस्था, भेंट प्रसाद व्यवस्था 🙏
दर्शन सरलता से - प्रसाद सरलता से 🙏
हर एक के मुख पर आनंद, विश्वास और संतुष्ट भाव 🙏
हर कोई बोले - जय श्री कृष्ण 🙏
हर कोई दौडे - नाथद्वारा धाम 🙏
हर कोई नाचे - श्रीनाथजी श्रीनाथजी 🙏
हर कोई झुमे - गिरिराज धरण की जय 🙏
हर कोई गाये - श्री कृष्ण: शरणं मम। 🙏
हर हर के नाथ - श्रीजीनाथ 🙏
हर हर के हाथ - पुष्टिसंस्कार 🙏
हर हर के नैन - आठों शमा दर्शन 🙏
बोलो श्री नाथजी बावा की - जय 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🙏🌷🙏

एक सूरज हर एक को उर्जा दे

एक आकाश हर एक को प्रकृति दे

एक धरती हर एक को अन्न दे

एक वायु हर एक को प्राणवायु दे

एक सागर हर एक को जल दे

हाँ! यही सत्य है

एक ही मातापिता हर एक को जन्म दे

एक ही समाज हर एक का उच्चता दे

एक ही धर्म हर एक को सिद्धांत दे

एक ही वर्ण हर एक की पहचान दे

एक ही गुरु हर एक को ज्ञान दे

एक ही प्रेम हर एक को मधुरता दे

हाँ! यही सत्य है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भाव - साधारण - एक उत्तेजना

जो कभी भी बदल सकता है

जो कभी भी कोई भी अर्थ कर सकता है

जो कभी भी कोई भी मान्यता में हो सकता है 🙏

भक्ति - भाव + ज्ञान

यहां समझ है - उत्साह है - जागृतता है

यहां नियम है - सिद्धांत है - उत्तमता है

जो केवल सही अर्थ ही कर सकते है

जो केवन सही शिस्त में बंधित है

जो केवल सही सिद्धांत से जुडे है

जो केवल सही संस्कार से सिंचित है

🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏

ज्ञान - विज्ञान - सज्ञान - प्रज्ञान

यहा समझ है - सिद्धांत है - जागृतता है

पर

शिक्षा है

दिशाबद्ध है

ध्येय है

निश्चय है

विश्वास है

केवल सत्याधिक है 🙏

जो केवल सिद्धांत से ही निर्मित है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" हिंडोला " अदभुत लीला है

प्रेम की अनोखी पराकाष्ठा है

पुष्टिमार्ग की यह अनोखी शैली

हमारा जीवन को मधुर कर देती है

यह लीला का स्पर्श वार्ता से नहीं

पर स्व रंग - संग और उमंग से है

प्रेम प्रेम प्रेम और प्रेम

जो नैन से नजारे

जो मन से मनारे

जो तन से तारे

जो धन से धारे

जो जीवन से जतारे

अदभुत - अनोखी - अलौकिक लीला

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम सत्य है

तो हमारा फल सत्य

हम सत्य है

तो हमारा जगत सत्य

हम सत्य है

तो हमारा ब्रह्म सत्य

हम सत्य है

तो हमारा धर्म सत्य

हम सत्य है

तो हमारा मर्म सत्य

हम सत्य है

तो हमारा संसार सत्य

हम सत्य है

तो हमारा मरण सत्य

हम सत्य है

तो हमारा शरण सत्य

हम सत्य है

तो हमारा जीवन सत्य

हम सत्य है

तो हमारा तथ्य सत्य

हम सत्य है

तो हमारा लक्ष्य सत्य

हम सत्य - हम सत्य - हम सत्य - हम सत्य

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सररर सररर सररर सररर

बरस बरसे

फररर फररर फररर फररर

वायु फरके

घडडड घडडड घडडड घडडड

बादल गरजे

सननन सननन सननन सननन

हवा लहरे

आयो सावन प्रेम सुहावन

बूंद बूंद से तरस जगाये

बरसत बरसत तडप जगाये

नजर नजर से मनवा दौडे

प्रीत मिलन की झंखना चाहे

हे कान्हा! हे प्रिये!

आजा निकटवा प्रेम पुकारे

बादल बादल से याद सताये

धार धार से धडकन जगाये

बौछार बौछार से अंग जलाये

थंड थंड सूरसूरे अगन लगाये

तेरा विरह मुझे बैचेन बनाये

हे कान्हा! हे प्रिये!

आजा सावरिया प्रेम पुकारे

" Vibrant Pushti "

“जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वेद दर्शन "

हम हिन्दु और हमारा धर्म, कर्म, वर्ण और जीवन हिन्दु 🙏

हम सिंचे है - हिन्दु संस्कार से

हम धरे है - हिन्दु संस्कृति से

हम सोचते है - हिन्दु विचार धारा से

हम घटते है - हिन्दु निती नियमों से

हम करते है - हिन्दु सिद्धांत से

हम सीखते है - हिन्दु साहित्य से

हम बिखराते है - ,हिन्दुत्व से

हम कहते है - हिन्दु संस्कृत से

हम विचरते है - हिन्दु धर्म से

सच! हमारा यही सत्य है 🙏

सच! हमारा यही शिव है 🙏

सच! हमारा यही सुंदर है 🙏

अर्थात समझते हो हम कौन है?

हाँ! निरपेक्षवादी

हाँ! समाजवादी

हाँ! सौम्यधारी

हाँ! कर्मप्रधान

हाँ! करुणानिधि

हाँ! साक्षरवादी

हाँ! हिन्दु धर्मधारी

हाँ! सत्यवादी

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जीवन "

एक कुटुंब है, जिनमें मातापिता, दादादादी, पुत्रपुत्रवधू और नन्हा सा छोटासा कान्हा 🙏

सब हसते खेलते कुदते जिए जा रहे थे।

हर सभ्य पढा लिखा और स्नातक। हर तरह के संस्कार और धर्म बंधनता।

घर में हर प्रकार की सुविधा और व्यवस्था। सब अपने अपने काम और जवाबदारी में निपुण और शिस्तबद्ध।

स्वच्छ - सुंदर और स्वस्थ घर का नियम और निश्चय। हर कोई यह नियम और निश्चय को एक दूसरे के साथ निभाते - हसता, कुदता, खेलता कुटुंब 🙏

सदा महकता - सदा आनंदित - सदा सुखमय कुटुंब। सब शिस्तबद्ध, सब नियमन से जीये और जीना। हर कोई अपना अपना अर्थोपार्जन और अर्थव्यवस्था में निपुण और मुग्ध।

सुख सुख और सुख।🌷

ओहहह! अदभुत🌷 उत्तम🌷आनंद 🌷

हर जीवन तो सबका जीवन 🙏

हर समृद्धि तो सबकी समृद्धि 🙏

हर जिम्मेदारी तो सबकी जिम्मेदारी 🙏

हर व्यवहार में त्यौहार 🌷

हर कर्म में संस्कार 🌷

हर संकल्प में एकता 🙏

हर प्रसंग में उत्सव 🌷

हर चहरे पर मुस्कान 😃

हर मुखडे पर संतोष 🙏

हर मन साथ साथ 👍

हर धन सर्व सर्वका 🙏

हर तन सदा सेवक 🙏

हर जीवन सदा समर्पण 🔥

ओहहह! तो तो यहां भगवान ही अवतरे 🌷

हाँ! एक पुत्र - कान्हा 🌷

कल आगे .... 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" चरण स्पर्श "

मातापिता चरण स्पर्श

गुरुदेव चरण स्पर्श

वडिल बांधव चरण स्पर्श

इष्टदेव चरण स्पर्श

कुलमाता चरण स्पर्श

कुलश्रेष्ठ चरण स्पर्श

धाम रज चरण स्पर्श

विद्या धाम चरण स्पर्श

आचार्य चरण स्पर्श

शिक्षक चरण स्पर्श

हमारी संस्कार में है अनोखा चरण स्पर्श

यह चरण स्पर्श कैसे और क्यूँ?

अनेकों अनेक अर्थ

अनेकों अनेक ज्ञान

अनेकों अनेक भाव

अनेकों अनेक समझ

अनेकों अनेक अनुभूति

अनेकों अनेक सुख

अनेकों अनेक आनंद

हाँ!

सार्थकता - यथार्थता - योग्यता - मान्यता

हर कोई की हर

मानसिकता - आध्यात्मिकता - आत्मियता

कौन क्या कहे!

" चरण स्पर्श " अदभुत और अलौकिक संस्कार है - मंत्र है।

अवश्य अपने आपमें शोधना - अवश्य सत्य की सूक्ष्म अनुभूति पायेंगे 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" माँ "

बेटा! कोई बात नहीं - मैं कर लूंगी

बेटा! तु अपना ख्याल कर - मैं कर लूंगी

बेटा! तुझे यह तकलीफ है - कोई बात नहीं - मैं कर लूंगी

बेटा! यह ध्यान रखना

बेटा! यहां संभलना

बेटा! लाओ मैं कर दूं

बेटा! तुम अपना काम कर दो - यह मैं कर लूंगी

बेटा! तेरा बच्चा रो रहा है - पहले उन्हें शांत कर मैं कर लेती हूं

बेटा! तुझे देर हो रही है - तु यह सब रहने दे - मैं कर लेती हूं

बेटा! तुझे यह खाना है, तो ही तेरी तबीयत अच्छी रहेगी - मैं बना देती हूं

बेटा! यह काम मैं निपटा देती हूं

बेटा! यह काम मैं करवा लूंगी

बेटा! तु आराम कर मैं सब संभाल लूंगी

तुझे यह अच्छा लगता है - चलो ऐसे करते है

तुझे यह अच्छा नहीं लगता है - छोड देते है

ओहहह! यह भूल हो गई - कोई बात नहीं - अब संभलना - अब ख्याल रखना

ओहहह! बेटा! तेरी तबीयत खराब है! तुम आराम करो - मैं सब काम निपटाती हूं

बेटा! तुम्हें यह चाहिए - मंगवालो

बेटा! तुम्हें कुछ चाहिए - ले लो

माँ! आज ऐसा है तो ऐसा करे

चोक्कस

माँ! आज तुम यह कर लेना

अवश्य

माँ! तुम यह करलो - वह करलो

हाँ! हाँ! चोक्कस - अवश्य

ओहहह! सबमें अपना हाथ - जय जगन्नाथ

ओहहह! सब संभाला सब संवारा

खुद को कुटुंब में स्वाहा कर दिया

" माँ " हाँ! यह है माँ 🙏

अगर हमारे जीवन में जो कोई हमारी चौखट पर - हमारे गृहस्थ जीवन में यज्ञ करता है - तो वह माँ है 🙏

माँ की सलाह - प्रेम

माँ की टकोर - प्रेम

माँ का साथ - प्रेम

माँ का हाथ - प्रेम

माँ की आज्ञा - प्रेम

माँ की अज्ञानता - प्रेम

माँ की अहवेलना - प्रेम

माँ! को धृतकार - प्रेम

माँ! को फटकार - प्रेम

माँ को तुच्छकार - प्रेम

माँ को टालना - प्रेम

हमारे संसार की विषता को पी कर अमृत बहावे - माँ 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक स्पंदन पुष्टि – वैष्णव

"Vibrant Pushti"

Inspiration of vibration creating by experience of

life, environment, real situation and fundamental elements

" *Vibrant Pushti* "

53, Subhash Park, Sangam Char Rasta

Harni Road, City: Vadodara - 390006

State: Gujarat, Country: India

Email: vibrantpushti@gmail.com

" जय श्री कृष्ण "